P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा विकास की रणनीति

आस्था प्रकाश
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
सी. आर. डी. पी.जी. महाविद्यालय,
गोरखपुर, उ.प्र., भारत

सारांश

जनसंख्या का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिलक्षित होता है। राष्ट्र की विकास सम्बन्धी सभी गतिविधियाँ इससे प्रभावित होती है। भारत में सम्पूर्ण मानव जाति का सातवाँ भाग निवास करता है अतः यहाँ की जनसंख्या तथा शिक्षा सम्बन्धी गतिविधियों की सफलता के प्रभाव का असर अत्यंत दूरगामी है। इस समस्या के समाधान का उत्तरदायित्व शिक्षा को दिया गया है। इसके परिणाम स्वरूप जनसंख्या शिक्षा प्रत्यय का विकास हुआ। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा की पाठ्य वस्तु विकसित की गयी है। जनसंख्या में रूचि लेने वाले विद्वान जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़ो तथा तथ्यों को स्पष्ट तो करते है परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में यह विशेष रूप से आवश्यक रहता है कि इन आँकड़ो को शैक्षिक आधार देकर जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़ो का व्यक्ति, परिवार, समाज, प्राकृतिक वातावरण, अर्थव्यवस्था आदि से सम्बन्ध स्पष्ट किया जाय।

जनसंख्या शिक्षा, शिक्षा का वह अंग है जिसके द्वारा जनसंख्या सम्बन्धी धारणाएं किस प्रकार बदली हैं और किस प्रकार यह बदलाव हमारे परिवारिक, सामाजिक, और राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित करता है, इसकी विस्तृत जानकारी प्रदान कराती है। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य है 'बालक का सर्वागींण विकास करना' अतः यह निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि बालक को विषयवार किन विषयों, क्रियाओं आदि की शिक्षा दी जाये जिससे उसमें वाँछित प्रतिभाओं का विकास किया जा सके इन उद्देश्यों कि पूर्ति पाठ्यक्रम निर्धारण के द्वारा ही संभव है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, जनसंख्या, विकास, पाठ्यक्रम।

प्रस्तावना

जनसंख्या वृद्धि के सम्बन्ध में सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में कहा गया है कि ''बहुप्रजा निऋतिविवेशः (1–164–32)'' अर्थात अधिक प्रजा (संतान) वाला घोर संकट पाता है। मनु जी का भी कथन है कि अकेले पहले पुत्र से ही व्यक्ति पुत्रवान हो जाता है। पित्र–ऋण से मुक्त हो जाता है। पहला पुत्र ही धर्म से उत्पन्न पुत्र है शेष तो लिप्सा से उत्पन्न है। आज विश्व की सबसे गम्भीर तथा मूल समस्या जनसंख्या वृद्धि की है। विकसित देशो नें जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण कर लिया है और जनसंख्या की गुणवत्ता कों बनाए रखा है। परन्तु विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है। जनसंख्या नियंत्रण को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है जिसमें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार वर्कशाप तथा सम्मेलन होते रहते है। जनसंख्या नीति का भी निर्धारण किया गया जिसके परिणाम स्वरूप वर्ष 1991 की जनगणना में आबादी में 23.87 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई थी, 2001 में 21.54 फीसदी की बढ़ोत्तरी देखी गई, जबकि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बीते एक दशक में आबादी 17.64 फीसदी बढ़ी है।

प्राप्त आँकड़ो के अनुसार जनसंख्या वृद्धि दर में पिछलें कुछ दशकों में सुधार देखने को मिलता है।

2011 की जनगणना से विदित होता हैं कि इसका जनसंख्या वृद्धि दर पर विशेष प्रभाव पड़ा है। परिवार नियोजन, परिवार कल्याण, प्रौढ़ शिक्षा तथा पर्यावरण शिक्षा आदि आयामों में भी जनसंख्या नियंत्रण का प्रयास किया जा रहा है। फिर भी भारत की जनसंख्या एक अरब से अधिक हो चुकी है।

भारत की 15वीं राष्ट्रीय जनगणना का कार्य 1 मई 2010 को प्रारम्भ हुआ जो 31 मार्च 2011 को सम्पन्न हुआ, जिसके पश्चात जनगणना के अंतिम आकड़ों को जारी किया गया। यह जनगणना दो चरणों में सम्पन्न हुई। तकनिकी संसाधनों को बढ़ावा देते हुए पहली बार जनगणना में बायोमैट्रिक

जानकारी एकत्रित की गयी। भारत की जनसंख्या बीते एक दशक में 18.1 करोड़ बढ़कर 1.21 अरब हो गयी है। जनगणना के ताजा आँकड़ो के मुताबिक देश में पुरूषों की संख्या 62.37 करोड़ और महिलाओं की संख्या 58.64 करोड़ है। जनसंख्या नियंत्रण के लिए प्रयास कर रहे देश के लिए अच्छी खबर यह है कि आबादी की वृद्धि दर में कमी देखी गयी है।

भारतवर्ष की जनसंख्या वृद्धि में क्षेत्रीय विषमता दिखाई पड़ती है। केरल में जन्मदर सबसे कम है जबकि उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश और इनसे नवसृजित राज्यों जैसे झारखण्ड, छत्तीसगढ़ आदि में जन्मदर अधिक है। केन्द्र एवं राज्य सरकार की नीति है कि जनसंख्या वृद्धि 1.6 अथवा इससे कम हो परन्तु इस समय वृद्धि दर 2.1 से अधिक है। जिन प्रान्तों में प्रतिव्यक्ति आय एवं शिक्षा अधिक है वहाँ जनसंख्या वृद्धि की दर कम है उनकी तुलना में वे प्रान्त जहाँ व्यक्तियों की आय एवं शिक्षा कम है वहाँ जनसंख्या वृद्धि अधिक है। शिक्षा एवं आय दोनों जनसंख्या वृद्धि दर को कम करते हैं। जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव, बच्चों की शिक्षा, सेवा के लिए उपलब्ध सुविधाओं, भोजन की गुणवत्ता आदि पर पड़ता है। जो परिवार आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं और वहाँ दो–तीन बच्चें ही हैं वे अपने बच्चों की शिक्षा की अच्छी व्यवस्था कर सकते हैं। उन्हें आवश्यकतानुसार पौष्टिक भोजन प्रदान कर सकते हैं और यदि उन्हें आगे चलकर सेवाकार्य नहीं मिलता है तो स्व नियोजन के लिए पूँजी तथा अन्य साधन उपलब्ध करा सकते हैं। जो परिवार आर्थिक रूप से विपन्न हैं और उनमें अधिक बच्चें हैं वे उनको न अच्छी शिक्षा दे पातें है ना ही समुचित विकास के लिए पौष्टिक भोजन उपलब्ध करा पाते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे परिवार के बच्चों का शारीरिक विकास प्रभावित होता है और अल्प शिक्षा प्राप्त करने के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

आज के बच्चे देश के भावी नागरिक हैं। जो बालक–बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण कर रहीं हैं वे आगे चलकर समाज में अपनी योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करेंगी और राष्ट्र के विकास में सहायक होंगी। परिवार के देखभाल एवं विकास में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का अधिक योगदान माना जाता है। शिक्षित बालिकाएँ भविष्य में परिवार के साथ–साथ सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगीं।

इस समस्या के समाधान हेतु शिक्षा को भी उत्तर दायित्व दिया गया है। इसके परिणाम स्वरूप जनसंख्या शिक्षा प्रत्यय का विकास हुआ। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा की पाठ्य वस्तु विकसित की गयी है और सभी स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा की पाठ्यवस्तु विकसित की गयी है और सभी स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा की व्यवस्था की गयी है।

'जनसंख्या शिक्षा' शिक्षा का वह अंग है जिसके द्वारा जनसंख्या सम्बन्धी धारणाएं किस प्रकार बदली हैं और किस प्रकार यह बदलाव हमारे परिवारिक, सामाजिक, और राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित करता है, इसकी विस्तृत जानकारी प्रदान कराती है। जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य देश के लिए एक स्वस्थ एवं योग्य भावी पीढ़ी के नागरिक प्रदान करना है। यह शिक्षा वर्तमान ही नहीं, भविष्य निर्माण में भी सक्रिय योगदान करती है। इस प्रकार जनसंख्या शिक्षा का लक्ष्य हमारी युवा पीढ़ी है।

जनसंख्या शिक्षा द्वारा छात्रों को यह समझाने का प्रयास करना है कि परिवार का आकार नियन्त्रण योग्य हो, जनसंख्या सीमित होने से देश के उच्च जीवन स्तर को बनाने में मदद मिलेगी तथा छोटा परिवार जीवन स्तर को भौतिक दृष्टि से उच्च बनाने में योगदान प्रदान करता है।

वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य है 'बालक का सर्वांगींण विकास करना' अतः यह निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि बालक को विषयवार किन विषयों, क्रियाओं आदि की शिक्षा दी जाये जिससे उसमें वाँछित प्रतिभाओं का विकास किया जा सके इन उद्देश्यों की पूर्ति पाठ्यक्रम निर्धारण के द्वारा ही संभव है। यह वह प्रयास है जो सामाजिक समस्याओं के सूचनाओं व वाँछित उद्देश्यों को विद्यालय में पाठ्यक्रमों द्वारा प्राप्त करता है। पाठ्यक्रम सम्पूर्ण विद्यालयी जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। यह विशिष्ट पाठ्यक्रम पाठ्य सामग्री के अध्ययन–अध्यापन से जुड़ा होता है। जो विद्यार्थियों को किसी एक विषय या अध्ययन के क्षेत्र में किसी एक विशिष्ट स्तर पर शिक्षा देने में सहायता प्रदान करता है।

भारत में व्याप्त जनसंख्या विस्फोट की स्थिति के परिणाम स्वरूप यह और भी आवश्यक हो जाता है कि देश की युवापीढ़ी को इस भयावह स्थिति के प्रति जागरूक बनाया जाए। सार्थक जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम के माध्यम से जन जागरूकता फैलती है। यह पाठ्यक्रम जनसंख्या सम्बन्धी तथ्यों से सम्बन्धित होता है, इसे जीवन जीने की एक विधि के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह ज्ञान बच्चों को प्रौढ़ जीवन में प्रभावी ढंग से जीने में सहायता प्रदान करेगी। जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान सीखने वालों में, बढ़ती जनसंख्या के जीवन पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के प्रति जागरूक करने के साथ ही परिवार नियोजन की प्रेरणा भी देती है। परिवार सीमित करने की उचित और प्रभावी प्रवृत्तियों का विकास करना भी जनसंख्या पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। जनसंख्या शिक्षा राष्ट्र के विकास का एक महत्वपूर्ण सशक्त साधन है। जनसंख्या शिक्षा को राष्ट्र के जीवन और आकांक्षाओं से सम्बन्धित कर राष्ट्र के लोगों में उचित मूल्य और प्रवृत्तियों का विकास करके राष्ट्र के समस्याओं को हल करने तथा चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने हेतु प्रभावी भूमिका अदा करती है। अतः यह आवश्यक है कि देश की शिक्षा व्यवस्था में जनसंख्या शिक्षा को समुचित महत्व दिया जाता है। जिसके द्वारा भावी नागरिकों को जनसंख्या की वृद्धि से होने वाले हानियों का ज्ञान कराया जाता है तथा उत्तम जीवन स्तर के लिए छोटा परिवार तथा कम जनसंख्या अधिक प्रभावी इत्यादि के महत्व को सामूहिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

विद्यालय शिक्षा के विभिन्न विषयों में जनसंख्या शिक्षा का स्थान

शिक्षा का उद्देश्य बालक में ऐसी निपुणता, सामर्थ्य तथा दृष्टिकोण विकसित करना जो समाज में

प्रभावी जीवन जीने के लिए आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा बच्चों को भावी पारिवारिक दायित्व निर्वहन के योग्य बनाने का कार्य विद्यालय करता है। जनसंख्या वृद्धि बालक के व्यक्तिगत, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा सम्पूर्ण संसार के मानवीय जीवन को प्रभावित करता है। अतः जनसंख्या शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाकर इसे भी अन्य विषय जैसे भाषा, गणित, भूगोल, विज्ञान, आदि के समान महत्व देकर उचित अर्थों में पढ़ाया जाता है। साथ ही इसे प्राथमिक शिक्षा से ही प्रारम्भ करने की योजना बनाई गयी है। जनसंख्या शिक्षा को बालक की सामान्य शिक्षा के महत्वपूर्ण भाग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सन् 1970 के बाद से ही जनसंख्या शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मलित करने का प्रयास किया गया किन्तु यह अमेरिका, भारत, इंग्लैण्ड, आदि देशों की कुछ विद्यालयों में ही संभव हो पाया।

जनसंख्या शिक्षा विषय के शिक्षा का तात्पर्य ऐसी बातों की शिक्षा से है जो बालक को यह बतायें कि परिवार सीमित रखनें से उसे, उसके परिवार, समाज व राष्ट्र को क्या लाभ है। परिवार नियोजन संभव तथा आवश्यक भी है। परिवार की संख्या का उसके तथा राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य विकास कार्यों से क्या सम्बन्ध है तथा जनसंख्या इन्हे किस प्रकार प्रभावित करती है आदि का अध्ययन कर भावी जीवन के लिए ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

जनसंख्या शिक्षा विषय को विद्यालय पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना आवश्यक है जिससे बालक जनसंख्या सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्यों से परिचित होता है। आज का बालक भावी जीवन में समाज के सदस्यों के रूप में तथा व्यक्तिगत रूप में भी जनसंख्या के सम्बन्ध में निर्णय लेने योग्य हो जाए। अतः अपने जीवन तथा पर्यावरण को प्रभावित करने बाले महत्वपूर्ण तत्व जनसंख्या के सम्बन्ध में उसे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जा रही है।

भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार इत्यादि हमारी प्रमुख आवश्यकताएं है। इनके अभाव का हमारे जीवन में विपरीत प्रभाव पड़ता है। जीवन स्तर उच्च बनाये बिना सुखी सम्पन्न और प्रभावी जीवन नहीं जीया जा सकता किन्तु अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि से यह संभव नहीं है। अतः जीवन को उच्च, सफल, सुखी और सम्पन्न बनाने के लिए जनसंख्या नियंत्रण तथा उनके प्रभावों का अध्ययन बच्चों कों कराया जा रहा है। यह ज्ञान विकसित अविकसित तथा ऐसे राष्ट्र जहाँ जनसंख्या नियंत्रित है, सभी में लागू की जा रही है। अतः जनसंख्या शिक्षा विषय को विद्यालय स्तर से ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाता है। इसकों पाठ्यक्रम के आधार पर स्वतंत्र अथवा समन्वित पाठ्यक्रम के रूप में सम्मलित किया जाता है।

जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम को एक स्वतंत्र विषय मानकर पाठ्यक्रम विकसित किया जाता है। विभिन्न कक्षाओं के स्तर के अनुसार जनसंख्या सम्बन्धी तथ्य निश्चित करके सुविधानुसार पाठ्यक्रम में रखा जाता है। जिसके द्वारा जनसंख्या सम्बन्धी बातों का विधिवत् गहन ज्ञान दिया जाता है। इस प्रकार का पाठ्यक्रम माध्यमिक कक्षाओं तथा महाविद्यालयों एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अधिक उपयोगी है। स्वतंत्र विषय के रूप में जनसंख्या शिक्षा को पाठ्क्रम से सबसें बड़ा लाभ यह है कि सीखने वालों में जनसंख्या सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं के प्रति ज्ञान बढ़ता है जिससे उनमें जागरूकता आती है।

जनसंख्या शिक्षा को संक्षिप्त पाठ्यक्रम के रूप में सामान्य विज्ञान तथा पर्यावरण पाठ्यक्रम के साथ जोड़ दिया जाए। इस प्रकार की व्यवस्था में इन विषयों की शिक्षा के साथ ही जनसंख्या सम्बन्धी महत्वपूर्ण बातें बतायी जाती है। इसके अन्तर्गत मूल विषय की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम बहुत कम तथा महत्वहीन होता है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों आदि में जनसंख्या शिक्षा एक स्वतंत्र अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में समाहित की जाती है।

औपचारिक शिक्षा स्कूलों या विश्वविद्यालयी शिक्षा में जनसंख्या शिक्षा को अन्य विषयों के साथ छोटी इकाई के रूप में समन्वित करके शिक्षण किया जाता है। यह विशेष रूप से समाजशास्त्र, भूगोल, नागरिकशास्त्र, भाषा, स्वास्थ शिक्षा, गणित, गृह विज्ञान, आदि विषयों में अधिक संभव है। इस प्रकार की व्यवस्था से स्कूलों तथा अन्य शिक्षा में भार बढ़ता नही है अन्य विषयों की शिक्षा के साथ–साथ जनसंख्या सम्बन्धित बातों का ज्ञान भी सीखने वाले को हो जाता है।

वर्तमान विषयों के पाठ्यक्रम को पूर्णतः संशोधित करके जनसंख्या सम्बन्धी तथ्यों को ऐसा जोड़ा जाता है, कि जनसंख्या सम्बन्धी तथ्य समन्वित पाठों से पूर्णतः सम्बन्धित लगें। इस प्रकार पाठ्य विषय और जनसंख्या शिक्षा के तथ्यों में कोई भिन्नता दिखायी नहीं देती। इस विधि के द्वारा पाठ्यक्रम में जनसंख्या सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित करके उन्हें पाठ्य विषयों में उपयुक्त स्थलों का चुनाव करके समन्वित किया जाता है। जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धित बातें ऐसी है कि विभिन्न विषयों के साथ सरलता से सम्बन्धित की जा सकती है।

जनसंख्या शिक्षा स्वयं अपने आप में विकसित हो रहा अध्ययन है इसका सम्बन्ध अनेक विषयों से जुड़ जाता है। जनसंख्या शिक्षा नैतिक तथा पारिवारिक जीवन सम्बन्धी समस्याओं व शरीर विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पोषण, औषधि शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, भूमि, उपयोगी चीजों की खपत आदि अनेक क्षेत्र भी जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित है। अतः जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम बनाने के लिए इसे वर्तमान विद्यालय पाठ्यक्रम से समन्वित करने के लिए प्रभावी और उपयोगी ढ़ंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्राथमिक स्तर पर जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम

इस स्तर पर छात्रों की संख्या सर्वाधिक होती है। अतः समाज के भावी नागरिकों को इस स्तर पर जनसंख्या सम्बन्धित सामान्य साधारण बातों का ज्ञान कराया जाता है। इस आयु में यौन सम्बन्धी ग्रन्थियाँ बच्चों में विकसित नहीं हो पाती अतः इस स्तर पर परिवार, उसके आधार, सुखी परिवार, आदि बातों को सरलता से बताया जाता है तथा बच्चों को यह भी बताया जाता है कि सीमित परिवार में कपड़ा, मकान, सुरक्षा, आदि की व्यवस्था करना सरल होता है तथा सीमित परिवार ही सुखी परिवार होता है। यदि परिवार में सदस्य अधिक हों

तो इन सुविधाओं को जुटाने के लिए बहुत धन आवश्यक होगा।

प्राथमिक स्तर पर एक ही शिक्षक दो या तीन कक्षाओं को पढ़ाता है इसलिए जनसंख्या की संकल्पनाओं को पाठ्यक्रम में समन्वित ढंग से जोड़कर सरलतापूर्वक शिक्षा दिया जाता है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षण साधन कम रहते है केवल पुस्तक और स्लेट ही मुख्यतः विद्यमान रहते हैं। अतः पाठ्य–पुस्तकों में जनसंख्या सम्बन्धी तथ्य सम्मलित करके पाठ्यक्रम विकसित किया जाता है।

पूर्व माध्यमिक स्तर पर जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम

मनोवैज्ञानिकों ने बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल कहा है। इसी उम्र में बालक में सामाजीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है सामाजिक गुणों का विकास होने के कारण बालक में नेतृत्व क्षमता का विकास भी होने लगता है अर्थात उनका जनसम्पर्क और अधिक बढ़ जाता है। अतः जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित और अधिक बातें उन्हे बतायी जाती है।

विषय के अनुसार अध्ययन में नागरिकशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, जीवशास्त्र, भाषा, गणित आदि विषयों से सम्बन्धित एक जनसंख्या शिक्षा की पुस्तक तैयार की योजना बन रही है अथवा इन्ही विषयों में एक छोटी इकाई के रूप में समन्वित करने का प्रयास किया जा रहा है। यूनिट या इकाईयों के आधार पर माध्यमिक स्तर पर शिक्षण करना अधिक प्रभावी व उपयोगी होता है इस आधार पर एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा विकसित जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम अधिक व्यवहारिक है। इस स्तर पर यूनिट अथवा इकाइयों के आधार पर शिक्षा अधिक प्रभावी व उपयोगी ढंग से देने का प्रयास किया जा रहा है। समय, धन, तथा शक्ति की उपयोगिता की दृष्टि से इस स्तर पर जनसंख्या शिक्षा विविध पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं– निबन्ध लेखन, वाद–विवाद, आशु भाषण, स्वरचित कविता, पोस्टर पेंटिग, नारा लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर तथा प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार राशि प्रदान कर उनकी रूचि इसमें विकसित की जा रही है।

उच्चस्तर पर जनसंख्या शिक्षा

उच्च स्तर पर छात्र–छात्राएँ आयु के आधार पर इतने परिपक्व हो जाते हैं कि वो अपने भावी जीवन के बारे में जागरूक हों, इस स्तर के छात्र–छात्राऐं जनसंख्या वृद्धि के परिणामों से परिचित होने लगते हैं तथा अपने परिवार के सदस्यों और साधनों के सम्बन्धों की समझ भी उनमें विकसित हो जाती है। अतः इस अवधि में उन्हें जनांकिकी सम्बन्धी समस्याओं तथा साधन और जनसंख्या का सम्बन्ध, सुखी पारिवारिक जीवन स्तर आदि कठिन संकल्पनाओं का ज्ञान कराया जाता है। सीमित परिवार करने सम्बन्धी उचित प्रवृत्तियों का विकास उनमें शिक्षा के माध्यम से दिया जाता है। इन स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा अलग पाठ्य विषय के रूप में तथा विभिन्न विषयों के साथ समन्वय करके अथवा छोटी इकाई के रूप में संगठित करके पढ़ाया जाता है।

निष्कर्ष

औपचारिक शिक्षा केन्द्रो तथा प्रौढ़ शिक्षा कक्षाओं में भी जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी ज्ञान दिया जाता है। वर्तमान में औपचारिक कक्षाओं और प्रौढ़ शिक्षा कक्षाओं में छात्र–छात्राएं, प्रौढ़ काफी संख्या में पढ़ने आते हैं। इन्हें पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से फिल्म, रेडियो, व्याख्यान, विस्तार सेवा आदि अनेक विधियों द्वारा जनसंख्या समस्या से परिचित कराया जाता है। प्रौढ़ शिक्षा कक्षाओं में यौन–शिक्षा सम्बन्धी बातें विशेष रूप से बताई जाती है। ये शिक्षा केन्द्र सामुदायिक शिक्षा केन्द्रों के रूप में विकसित किये जाते है। जहाँ विकास कार्यक्रमों और जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी बातों का ज्ञान कराया जाता हैं। प्रचलित पाठयक्रम के विषयों में जनसंख्या सम्बन्धी तथ्यों को जोड़ने के लिए पुस्तकों का पुनर्निर्माण करवा के उपयुक्त स्थानों पर जनसंख्या सम्बन्धी तथ्यों को जोड़कर उनका पुनः मुद्रण किया गया है। स्वतंत्र पाठ्यक्रम के रूप में जनसंख्या शिक्षा रखने का तात्पर्य है, कि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर इस प्रकार की व्यवस्था से अलग से शिक्षक की आवश्यकता होती है, तथा इससे शिक्षा व्यय में वृद्धि होती है। अतः प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर प्रचलित पाठ्यक्रम में जनसंख्या नियंत्रण सम्बन्धी जानकारी विभिन्न विषयों के साथ दिया जा रहा है। उच्च शिक्षा में इसे स्वतंत्र विषय के रूप में अनिवार्य विषय बनाकर पाठ्यक्रम में लागू किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

https://m-hindi.webdunia.com

मलैया एवं शर्मा (2007) : जनसंख्या शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

मौर्य, सहाबद्दीन : पूर्वी उत्तर प्रदेश की नगरीय जनसंख्या में निर्भरता अनुपातः विकासशील पत्रिका अंक 1

मौर्य,एस0डी0 (2004) : जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

सिंहा, बी0सी0 एवं सिन्हा पुष्पा (1995): जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा,

सिंह, दुर्गावती (1969) : 'छोटा परिवार सुखी परिवार' अरविन्द कुमार व राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली

डॉ सिंह भोपाल (2008) : जनसंख्या शिक्षा